समकालीन कला के विकास में महिला कलाकार संजू दास जी का योगदान

ओम प्रकाश मिश्रा
शोधार्थी
ईमेलः mishraop200@gmail.com

डॉ० आशीष गर्ग
विभागाध्यक्ष, फाइन आर्ट विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

Reference to this paper should be made as follows:

ओम प्रकाश मिश्रा,
डॉ० आशीष गर्ग

समकालीन कला के विकास में महिला कलाकार संजू दास जी का योगदान

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No. 18 pp. 122-125

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

वर्तमान समय नारी अपनी आवाज को बुलंद कर अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त तरीके से रखती है। साथ ही साथ लोक–कला आज के विज्ञापन युग में वैश्विक मंच को प्राप्त कर चुकी है जिसमे विहार की मिथिला कला एक है। लोक कला की माधुर्यता एवं स्त्री मन की पीड़ा तथा गाँव से पलायन किये ग्रामीण इन सभी को एक चित्रतल पर आयाम देने का कार्य आज की समकालीन कला में देखा जा सकता है। जो विज्ञान युग के क्रांतिकारी परिवर्तन तथा ग्रामीण जीवन की सहजता का आभास करती हो। समकालीन कला में लोक कला के प्रभावों कुछ कलाकारों ने बेहद सक्षता से प्रस्तुत किया है। इसी क्रम में महिला समकालीन कलाकार श्रीमति संजू दास जी का नाम उल्लेखित है। जिन्होंने लोक शैली में समकालीन कला के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियों को प्राप्त किया है।

मुख्य बिन्दु

समकालीन, ग्रामीण, महिला, कलाकार, लोककला, नारी भावना।

प्रभावशाली रंग संयोजन, लोककला मधुबनी की माधुर्यता लिए, प्रसन्नचित्त एवं सहजता से ओतप्रोत जन, गांव की सादगी एवं पक्षियों की चहचहाहट से ओतप्रोत, कृतियों की धनी संजू दास की कला यात्रा स्वयं में मील का पत्थर साबित करती प्रतीत होती है। वर्तमान में समकालीन कला के परिपेक्ष्य में आप की कृतियों को कला जगत में अनेक सम्माननीय मुकाम प्राप्त हुआ है। आप के चित्रों में गांव के जीवन की झलक में सहजता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

संजू दास जी स्वयं के बारे में बताते हुए कहती हैं कि मैं मिथिला की स्व–प्रशिक्षित कलाकार हूँ, किंतु पारंपरिक मिथिला शैली में मैं काम नहीं करती। अपनी प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान मैंने मिथिला चित्रकला के क्षेत्र में कदम रखा था। जिसे मधुबनी के नाम से भी जाना जाता है। बिना किसी गंभीर प्रयास के अपनी माँ के निर्देशन में मैंने यह दिव्य कार्य प्रारंभ किया फिर धीरे–धीरे स्वयं ही मैंने अपने क्षितिज को व्यापक एवं सार्थक बनाने का फैसला किया और आधुनिक कला के व्याकरण से प्रभावित हुई। इसका सबसे बड़ा कारण मेरे पति हैं, जिनसे समय–समय पर मुझे उनसे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलता रहा।

इस कारण आप देखेंगे कि मेरे काम से समकालीन आधुनिक कला एवं मिथिला कला का सार एक साथ व्याप्त है। आधुनिक समकालीन कला के चुनिंदा और सटीक समावेश ने मुझे स्वयं को व्यक्त करने में मदद की। मेरे चित्रों के मुख्य पात्र महिलाएं हैं।

अपनी प्रारंभिक जीवन के बारे में बताते हुए श्रीमती संजू जी कहती हैं कि मेरी शादी से पहले मैं गांव में पढ़ती थी और अपना अधिकांश समय गांव में रहने वाली महिलाओं के साथ व्यतीत करती थी। इसका प्रभाव आपको मेरे काम में मिलेगा जहां अधिकतर महिला आकृतियाँ ही नजर आएंगी। मेरी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएं मुझे अतिप्रिय हैं। शहर में होने के बावजूद मेरा कार्य मूल रूप से गांव की महिलाओं एवं उनके इर्द–गिर्द घूमती समस्याओं पर केंद्रित रहा है। जाहिर तौर पर मेरा मानना है कि आज भी भारत में महिलाओं को वह सम्मान नहीं मिलता जिनकी वे हकदार हैं।

ग्रामीणांचल को छोड़ने की पीड़ा आपकी कृतियों में सहज रूप से देखी जा सकती है। उम्मीदों का स्वप्न एक सपनों की उड़ान लिए हुए युवा कलाकार उस पीड़ा को समकालीन आधुनिक कला के एक श्रेष्ठ उर्वरक भूमि पर रोपित कर दिया है जो अब एक छायादार, फलदार वृक्ष बन कर उन्हें प्रफुल्लित कर रहा है। आपकी कृति "मोह की नाव" में आप दर्शाती हैं कि मैं स्वयं मोह की नाव में सारे अरमानों को लिए शहर की तरफ जा रही हूँ। अपनी बाल्यावस्था में माता, बहन इत्यादि के साथ अल्पना एवं रंगोली, कोहबर इत्यादि का सृजन करते हुए काफी करीब से कला को महसूस किया है। किंतु उस समय ऐसा कोई

भाव मन में ना था कि हमें कलाकार ही बनना है। मेरी कला यात्रा का संपूर्ण श्रेय मेरे पति रविंद्र दास जी को जाता है। लोक कहावतों में यह विख्यात हैं कि हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है किंतु मेरे मामले में आप यह कह सकते हैं कि मेरी सफलता के पीछे एक पुरुष मेरे पति का हाथ है।

ऐसे प्रेमी पति का सानिध्य मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं था। उपहार में प्राप्त स्केचबुक पर नित्य साधना करते हुए अपने गंतव्य को मैने प्राप्त किया। धीरे–धीरे कला विथिकाओं में आना जाना एवं निरंतर कला का रसास्वादन प्रारंभ हुआ फलस्वरूप स्वयं की कृतियों में आधुनिक कला के अनुसार सुधार कर उन्हें परिमार्जित किया। उक्त समय आधुनिक कला दीर्घा में लगी महिला कलाकारों की कृतियों का अवलोकन कर यह भाव प्रस्फुटित हुआ कि जब यह लोग दूर रहकर भी लोक कला के प्रभाव एवं आकर्षण से ना बच पाये तो मैं वहां की मॉटी से पल्लवित एवं पुश्पित हूँ। बस क्या था मधुबनी शैली के मानव आकृतियों, पशु–पक्षियों एवं उन्हें आधुनिकता का अमलिजामा पहनाकर नवीन सृजन में लग गई।

यह बात 1998 की है जब बाल भवन में कला मेला लगा था, जिसमें अपने पति रविंद्र जी के स्टॉल पर मैने अपनी छोटी सी पेंटिंग का प्रदर्शन भी किया। यह प्रदर्शन पूर्ण रूप से संजीवनी दायक था। कला प्रशंसकों का उत्साह–वर्धन ने आगे का कार्य प्रशस्त किया। कार्य की निरंतरता बढ़ती गई और सफलता का मार्ग प्रशस्त हुआ। जल रंग, मिश्रित माध्यम, पेन इंक इत्यादि से तैयार हुई कलाकृतियों को चाणक्यपुरी के ग्रीन लैंड बैंक के बेसमेंट में बनी कलाविथिका में मैने अपने कार्यों का प्रदर्शन किया। यहां से सराहना एवं उत्साह वर्धन के लिए प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई। जिससे मेरे पंखों को बल मिला और मैं अपने सपनों के अनंत आकाश में अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ती चली गई। सफलता ने अकादमिक शिक्षा के मलात से सदैव आपको मुक्त रखा। आधुनिक कला दीर्घा दिल्ली, आईफैक्स, ललित कला अकादमी दिल्ली, बिहार इत्यादि जगह आपकी कृतियां प्रदर्शित भी हुईं तथा कला के प्रशंसकों के द्वारा खरीदी गईं। निरंतर कला का सानिध्य एवं कला बाजार का सकारात्मक सहयोग अति आनंद–दायक था। जैसा कि आप को ज्ञात होगा किग्रामीणांचलों में महिलाओं को घर की चारदीवारी में बंद कर रहना होता है हालांकि अब काफी बदलाव आ गया है।

कला में निरंतर कार्य करते हुए आपको बिहार सरकार से कला सम्मान प्राप्त हुआ। तब कार्य की तरफ और भी लगन दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली गई। आप अपने चित्रो में नारी मन की पीड़ा व्यक्त कर कहती हैं की महिलाएं अपने अंदर आने वाली इच्छाओं को लिए रहती हैं, जो प्रायः दबी रहती हैं अतः विशेष स्थिति में ही प्रकट होती हैं। जब भी मैं आकाश में उड़ते हुए जहाजों को

देखती हूं तब मेरी भी इच्छा उड़ने की करती है। यही इच्छा मुझे पेन्ट करने, कृतियों को निर्मित करने को प्रेरित करती हैं। उदाहरणतः मसूर की दाल से निर्मित कृति, धान से बनाया गया यथार्थ से बिल्कुल नजदीक हिरण की कृति से यात्रा होते हुए समकालीन कला में लोक कला का संफुटन दे, एक सशक्त आयाम की रचना करती हैं। आपकी कृति माय विलेज, माय फैमिली, जैसी अन्य सभी संरचना में पारिवारिक प्रेम, सामंजस्य, गांव इत्यादि की सुगंध पैदा करती है। जो स्त्री के मन में उत्पन्न होने वाली मनोभाव को पैदा करती हैं एवं उसे उड़ने को अनंत आकाश प्रदान करती है। चित्र में संपूर्ण ग्रामीणांचल तथा आकाश में उड़ती एक महिला आकृति समस्त ग्रामीण नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। वह लोग जो गांव को छोड़कर शहर में आ जाते हैं किन्ही कारणवश वह वापस नहीं जा पाते। उन्हीं की पीड़ा को यह दर्शाया गया है। आपके कृतियों में ग्रामीण जीवन के लगभग–लगभग सभी पक्षों का साक्षात्कार किया जा सकता है। जिसमें समकालीन आधुनिक कला का बोध है एवं लोक कला माधुर्य भी समाहित है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आप समकालीन आधुनिक कला में सशक्त हस्ताक्षर हैं। जिनकी कला से कला साधकों को प्रेरणा एवं कलापीपाशुओं को तृप्ति प्राप्त होती है। आपकी कला लुप्त होती सहजता को संरक्षित होने का आभास प्रदान कर आश्वासित करती हैं की, ग्रामीणांचल एवं स्त्री ही समस्त सौंदर्य बोध का दर्शन है जो कला एवं कलाकार को परमानंद की ओर ले जाता है। संभवतरू इसी भावना को संत कबीर ने साधो सहज समाधि भली उक्ति से व्याख्यान्वित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. तिवारी, पंकज. (2021). सामना. ई–पेपर. 0724।
2. (2022). आउट लुक. पत्रिका वर्ष. १४ अंक. १२–मई–जून।
3. (2022). जागरण सखी पत्रिका. अप्रैल।
4. (2022). मैथिल ललना–मैथिल टाइम्स. नैसर्गिक प्रतिभाक स्वामिनी–संजू दास. दिसंबर।